Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

नवाचार सततता और राष्ट्रीय प्रगति के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली

श्रीमती श्वेता तिवारी पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, (छ.ग.)

सारांश

भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, धातुकर्म, योग, नाट्य, दर्शन, कृषि, जल-प्रबंधन तथा जीवन-उपयोगी विज्ञानों की अनेक विधाएँ भारत में विकसित हुईं, जिन्होंने न केवल भारतीय समाज बल्कि संपूर्ण विश्व को दिशा प्रदान की। आज के विज्ञान और तकनीकी प्रभुत्व वाले युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) पुनः वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण होती जा रही है। नवाचार, सततता और राष्ट्रीय प्रगति- ये तीनों ही आधुनिक भारत के प्रमुख लक्ष्य हैं, और भारतीय ज्ञान प्रणाली इन तीनों को सार्थक रूप से जोड़ने की क्षमता रखती है।

समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि और तकनीकी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की अंतर्निहित नवाचार क्षमता का उचित उपयोग किया जाए। भारत का 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प तभी संभव है जब शिक्षा और नवाचार के साथ-साथ सतत और स्वदेशी विकास मॉडल को अपनाया जाए। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक व श्रेष्ठ सिद्धान्तों को आधुनिक वैज्ञानिक विधियों के साथ जोड़कर एक बहुआयामी ढाँचा प्रदान करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और सततता दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। सतत विकास प्रकृति के साथ संतुलन, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और दीर्घकालिक समाधान- आईकेएस के मूल सिद्धान्तों में निहित है। इसी प्रकार, राष्ट्रीय प्रगति के संदर्भ में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली राष्ट्र की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और आर्थिक नींव को मजबूत करती है। विशेष रूप से *नई शिक्षा नीति 2020* ने अनुभवात्मक अधिगम, सांस्कृतिक चेतना, बहुविषयकता और आधुनिक विज्ञान के साथ पारंपरिक ज्ञान के एकीकरण पर विशेष बल दिया है। अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली आज केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि भविष्य के भारत का व्यावहारिक, नवाचारी और सतत विकास-आधारित मॉडल है।

मुख्य शब्द (Keywords)- भारतीय ज्ञान प्रणाली, नवाचार, सततता, राष्ट्रीय प्रगति, विश्लेषण, अनुभवात्मक अधिगम, पारंपरिक ज्ञान, रचनात्मकता, कार्यप्रणाली, बहुविषयकता, गुणवत्ता, सांस्कृतिक परंपरा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. यह विश्लेषण करना कि भारतीय ज्ञान प्रणाली विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, शिक्षा और सामाजिक संरचनाओं में नवाचार को किस प्रकार बढ़ावा देती है।
2. पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन, कृषि एवं स्वास्थ्य प्रणालियों में सततता के सिद्धान्तों का मूल्यांकन करना।
3. भारतीय ज्ञान प्रणाली की राष्ट्रीय प्रगति में भूमिका का समग्र अध्ययन करना।
4. यह समझना कि भारतीय ज्ञान प्रणाली सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास में किस प्रकार योगदान देती है।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाने के लिए नवाचार आधारित विकास मॉडल अनिवार्य है। भारतीय ज्ञान प्रणाली योग, आयुर्वेद, वास्तु, जल प्रबंधन, कृषि, धातुकर्म जैसी अनेक विधाओं में

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

स्वदेशी और वैज्ञानिक समाधान प्रदान करती है, जो भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने में सक्षम हैं।

आईकेएस में सतत खेती, जल संरक्षण, जीवन-शैली संतुलन, प्रकृति-संगत व्यवहार और सामाजिक समरसता जैसी अवधारणाएँ गहराई से निहित हैं, जो सततता के आधुनिक सिद्धान्तों से पूर्णतः मेल खाती हैं। इस प्रकार सतत विकास के अध्ययन में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय प्रगति के संदर्भ में भी आईकेएस की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भारत की सांस्कृतिक अस्मिता, वैज्ञानिक चिंतन और आर्थिक संरचना को सशक्त बनाती है। योग, आयुर्वेद, भारतीय तकनीक, वस्त्र-शिल्प और हस्तकला आज विश्व स्तर पर तेजी से स्थापित हो रही हैं, जो यह दर्शाती हैं कि आईकेएस न केवल अतीत की धरोहर है बल्कि आधुनिक भारत के विकास में भी एक सशक्त आधार है। अतः भारत की भविष्य की नीतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

परिकल्पनाएँ

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धान्त और पद्धतियाँ, जो समग्रता, संतुलन तथा मूल्य-आधारित चिंतन पर आधारित हैं, आधुनिक नवाचारों के लिए एक अद्वितीय एवं सुदृढ़ ढाँचा प्रदान करती हैं।
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन से सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति अधिक प्रभावी ढंग से सुनिश्चित की जा सकती है।
3. पारंपरिक ज्ञान, दर्शन और प्राचीन तकनीकें आधुनिक नवाचार प्रक्रियाओं को सशक्त बनाने में सक्षम हैं, विशेषकर ग्रामीण एवं स्थानीय स्तर पर जहाँ स्वदेशी संसाधनों और परिस्थितियों के अनुरूप नवाचार अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं।
4. भारतीय ज्ञान प्रणाली पर्यावरण-अनुकूल, किफायती और दीर्घकालिक समाधान प्रदान करती है, जो सतत विकास और राष्ट्रीय प्रगति दोनों के लिए अनिवार्य हैं।
5. भारतीय ज्ञान प्रणाली को राष्ट्रीय विकास योजनाओं में सम्मिलित करने से भारत वैश्विक स्तर पर एक ज्ञान-प्रधान राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्ञान प्रणाली कोई मात्र ऐतिहासिक संरचना नहीं है, बल्कि यह बहुविषयक, वैज्ञानिक और अनुभवजन्य सिद्धान्तों का एक व्यापक संग्रह है। इसमें निहित दर्शन तर्क, प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द और अनुमान जैसे मजबूत आधारों पर निर्मित है, जो आधुनिक शोध पद्धतियों और आलोचनात्मक चिंतन के लिए प्रभावी साधन प्रदान करते हैं। गणित, खगोल, रसायन, चिकित्सा, कृषि और जल-प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भारतीय सभ्यता की उपलब्धियाँ आधुनिक वैज्ञानिक विकास की नींव मानी जाती हैं। साहित्य समीक्षा यह संकेत करती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित सिद्धांत स्वदेशी विकास मॉडल, नवाचार और सततता के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

शोध विधि

- **वर्णनात्मक विधि (Descriptive Method)**
- **अवलोकन विधि (Observation Method)**

विश्लेषण

भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित वैज्ञानिक तथा तकनीकी योगदान—जैसे शून्य का सिद्धांत, दशमलव पद्धति, बीजगणित, जल-प्रबंधन, चिकित्सा विज्ञान एवं धातु-तकनीक—आधुनिक वैज्ञानिक विचारों की नींव साबित होते हैं। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि भारतीय सिद्धान्त आधुनिक क्षेत्रों जैसे कंप्यूटर विज्ञान, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, चिकित्सा प्रणाली, पर्यावरण संरक्षण तथा स्थायी कृषि के साथ प्रभावी रूप से एकीकृत किए जा सकते हैं। विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित मूल्य, संतुलन, समरसता, प्रकृति-संगतता और आत्म-चेतना—भविष्य उन्मुख नवाचारों को अधिक मानवीय, नैतिक और सतत बनाते हैं।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

उपसंहार

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली नवाचार, सततता और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक गतिशील, प्रासंगिक और मूल्य-आधारित संरचना प्रदान करती है। यह 21वीं सदी की जटिल चुनौतियों जैसे पर्यावरण संकट, स्वास्थ्य जोखिम, सांस्कृतिक क्षरण और आर्थिक असमानताओं का समाधान स्वदेशी, किफायती एवं दीर्घकालिक उपायों के माध्यम से प्रस्तुत करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल शिक्षा को पुनर्परिभाषित करती है बल्कि समाज को बौद्धिक, नैतिक और वैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाती है। यह समझना आवश्यक है कि आईकेएस, नवाचार, सततता और राष्ट्रीय प्रगति ये चारों परस्पर सम्बद्ध हैं और राष्ट्र को विकसित भारत की दिशा में अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनर्पाठ, पुनरुत्थान और पुनर्प्रयोग आने वाले भारत के लिए एक मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- *कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2020).* शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. *नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक प्रकाशन।*
- *पवन, एम. (2023). भारतीय ज्ञान प्रणाली और अभिनव शिक्षण.* एस.एस.आर. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, *अक्टूबर अंक।*
- *सिंह, विमलेश (2021).* भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक संदर्भ. *मधेपुर: अकादमिक प्रकाशन।*
- *विश्वास, दीपांकर (2022). भारतीय ज्ञान प्रणाली का बहुविषयक विश्लेषण.* जर्नल ऑफ़ इंडिजिनस स्टडीज़, *8(2)।*
- *महादेव, पवन (2021).* भारतीय पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा. *महाराष्ट्र: श्रीशैल प्रकाशन।*